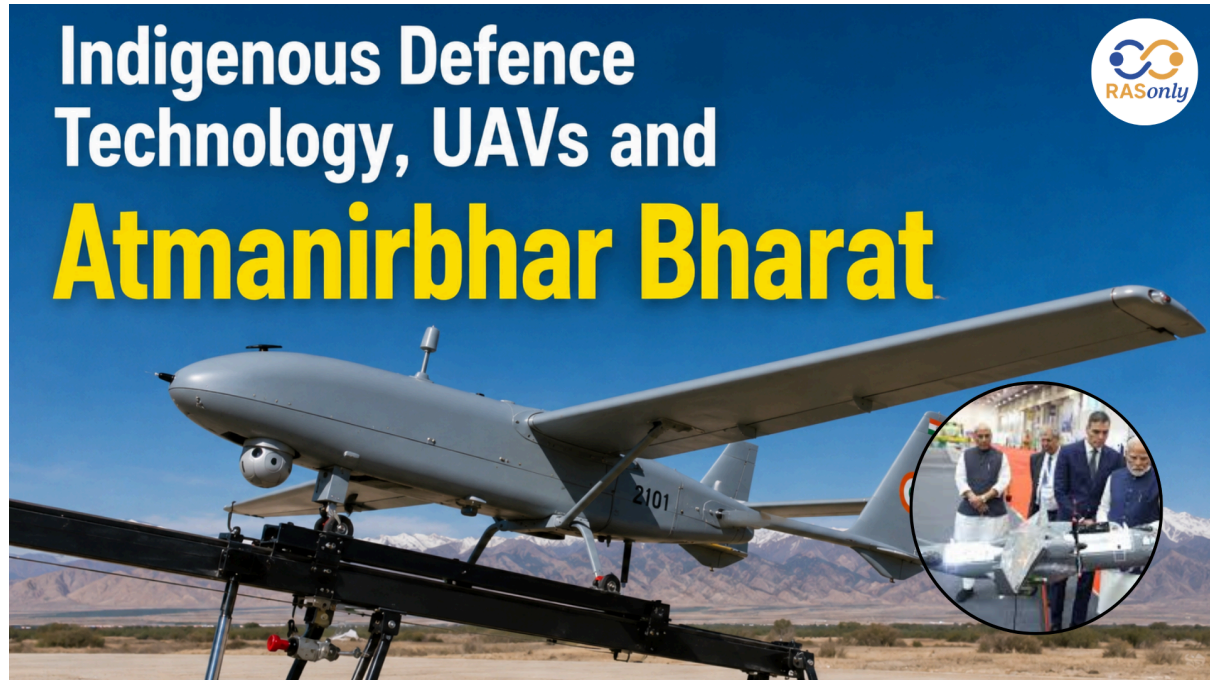


Indigenous Defence Technology, UAVs and Atmanirbhar Bharat



The successful test of the Divyastra MK-1 UAV in Jodhpur is a significant boost to India's efforts in indigenous defence technology. The test was carried out in front of military officials, with the UAV being sent into the air from a mobile launcher mounted on an SUV. The Divyastra MK-1 can be flown up to 500 km without any human intervention. It has been designed for missions like surveillance, intelligence collection, target identification and precision strike. The successful test in desert-like environment showcases India's advancement in the field of advanced unmanned military systems and contributes to the overall vision of 'Atmanirbhar Bharat' in the defence sector.

Key Features of Divyastra MK-1 UAV

- Divyastra MK-1 is an Unmanned Aerial Vehicle (UAV) designed and developed in the country.
- It was tested in Jodhpur with military officers and successfully achieved.
- It was launched from the mobile launcher on an SUV.
- It has a range of up to 500 km.
- It can work without the human supervision at all times.
- It has electro-optical and infrared sensors.
- It also has a communication relay system.
- A range of payload types can be accommodated, depending on the mission.

- It can be useful for surveillance missions, intelligence gathering, target identification and precision strike missions.
- The electronic propulsion and semi-autonomous feature were tested.
- This test was performed under severe wind and temperature conditions: 53°C and 50 km/h respectively.

Difference Between Drone and Suicide Drone

General Drone

- The primary use of a normal drone is for surveillance and monitoring.
- It may be recoverable after the mission.
- It may be used again for future operations.

Suicide Drone or Loitering Munition

- A suicide drone is simply a drone that is specifically programmed to destroy the target as well as itself.
- It is armed with an explosive payload.
- Once it is launched, it can stay in the air for a while, looking for its prey.
- After the target is identified, it will crash into the target and explode.
- It is irretrievable following the strike.

Defence Significance

Strategic Importance

- The successful test will further boost indigenous defence technology in India.
- It enhances India's expertise in Unmanned warfare systems.
- It can be used to assist field operations in challenging environments and extreme weather.
- This is a mobile launch feature that adds flexibility on the battlefield.
- It is semi-autonomous which means it does not rely on all the time for man to control it.

Relevance for Rajasthan

- The city of Jodhpur is strategically important because of its location in the western part of Rajasthan.
- With the successful test in high temperature and strong wind, the UAV is proved to be suitable for desert and semi-arid areas.
- These trials are crucial for India's defense capabilities on the western front.

Conclusion

The successful test of Divyastra MK-1 in Jodhpur is an important step in India's journey towards self-reliance in defence technology. It is useful for modern battlefield

requirements because of its range, sensor systems, mobile-launching and semi-autonomous operation. This is significant for the preparation of defence technology, internal security, Atmanirbhar Bharat and the strategic importance of Rajasthan for the preparation of RAS.

MCOs

1. With respect to Divyastra MK-1, which of the following statements is true?

1. It has been successfully tested in Jodhpur.
2. It can operate up to a range of 500 km.
3. Needs constant supervision when operating.

Which of the statements given above is/are correct?

- A. 1 and 2 only
- B. 2 and 3 only
- C. 1 and 3 only
- D. 1, 2 and 3

Answer: A. 1 and 2 only

Explanation: It is successfully tested in Jodhpur and has a range of up to 500 km Divyastra MK-1. The report notes that it works semi-autonomously, and does not need constant human oversight. Thus, statements 1 and 2 are true and statement 3 is false.

2. Of the following features, which one was associated with the successful test of Divyastra MK-1?

- A. Liquid fuel rocket propulsion
- B. Electro-optical sensors, infrared sensors and communication relay system
- C. Manned cockpit and manual firing of artillery.
- D. Nuclearpower and Satellite-only operation.

Answer: B. Electro-optical sensors, infrared sensors and communication relay system.

Explanation: Divyastra's sensors are electro-optical and infrared, and it has a communication relay system. Some of these qualities make it ideal for surveillance,

intelligence, target identification and precision operations. The other options talk about attributes that do not relate to the UAV in the story cited in the news.

3. What is the primary difference between a normal drone and a suicide drone or loitering munition?

A. A normal drone is always used within water and a suicide drone is only used in space.

B. The main difference between a normal drone and a suicide drone is that the latter is meant to destroy the target and itself upon being attacked.

C. A normal drone won't have sensors, and a suicide drone will have just cameras.

D. The normal drone only can be fired from the air, and the suicide drone only can be fired from the ship.

Answer: B. A normal drone is primarily re-usable, a suicide drone destroys the target with itself.

Explanation : Normal drone is primarily used for surveillance and its recovery and reuse are normally possible. Suicide drone (also called loitering munition) is a drone that has an explosive warhead and is meant to crash into the target and explode. Its primary mission is to destroy these targets – it's not recovery.

स्वदेशी रक्षा तकनीक, यूएवी और आत्मनिर्भर भारत

भारत की स्वदेशी रक्षा तकनीक को मजबूत करने की दिशा में जोधपुर में 'दिव्यास्त्र एमके-1' यूएवी का सफल परीक्षण एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह परीक्षण सैन्य अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया, जिसमें इस मानव रहित यान को एसयूवी पर लगे मोबाइल लॉन्चर से प्रक्षेपित किया गया। 'दिव्यास्त्र एमके-1' बिना लगातार मानवीय नियंत्रण के 500 km तक संचालित हो सकता है। इसे निगरानी, खुफिया जानकारी जुटाने, लक्ष्य पहचान और सटीक प्रहार जैसे अभियानों के लिए विकसित किया गया है। रेगिस्तानी परिस्थितियों में इसका सफल परीक्षण भारत की उन्नत मानव रहित सैन्य प्रणालियों की क्षमता को दर्शाता है और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को मजबूती देता है।

दिव्यास्त्र एमके-1 यूएवी की प्रमुख विशेषताएँ

- दिव्यास्त्र एमके-1 एक स्वदेशी मानव रहित हवाई वाहन है।
- इसका सफल परीक्षण जोधपुर में सैन्य अधिकारियों के समक्ष किया गया।
- इसे एसयूवी पर लगे मोबाइल लॉन्चर से प्रक्षेपित किया गया।
- इसकी मारक/संचालन सीमा 500 km तक है।

- यह लगातार मानवीय नियंत्रण के बिना काम कर सकता है।
- इसमें इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड सेंसर लगे हैं।
- इसमें संचार रिले प्रणाली भी मौजूद है।
- मिशन की आवश्यकता के अनुसार इसमें अलग-अलग प्रकार के पेलोड लगाए जा सकते हैं।
- यह निगरानी, खुफिया जानकारी जुटाने, लक्ष्य पहचान और सटीक प्रहार अभियानों में उपयोगी है।
- परीक्षण के दौरान इसकी इलेक्ट्रॉनिक प्रणोदन प्रणाली और अर्ध-स्वायत्त क्षमता का मूल्यांकन किया गया।
- यह परीक्षण 53°C तापमान और 50 km/h हवा की गति जैसी कठिन परिस्थितियों में किया गया।

सामान्य ड्रोन और आत्मघाती ड्रोन में अंतर

सामान्य ड्रोन

- सामान्य ड्रोन का मुख्य उपयोग निगरानी और मॉनिटरिंग के लिए होता है।
- मिशन पूरा होने के बाद इसे सामान्यतः वापस प्राप्त किया जा सकता है।
- इसे भविष्य के अभियानों में दोबारा उपयोग किया जा सकता है।

आत्मघाती ड्रोन या लोडट्रिंग म्यूनिशन

- आत्मघाती ड्रोन को लक्ष्य के साथ स्वयं को भी नष्ट करने के लिए बनाया जाता है।
- इसमें विस्फोटक पेलोड लगा होता है।
- प्रक्षेपण के बाद यह कुछ समय तक हवा में रहकर लक्ष्य की खोज कर सकता है।
- लक्ष्य की पहचान होने के बाद यह उससे टकराकर विस्फोट करता है।
- प्रहार के बाद इसे वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता।

रक्षा दृष्टि से महत्व

रणनीतिक महत्व

- यह सफल परीक्षण भारत की स्वदेशी रक्षा तकनीक को मजबूती देता है।
- इससे मानव रहित युद्ध प्रणालियों में भारत की क्षमता बढ़ती है।
- यह कठिन भू-भाग और कठोर जलवायु परिस्थितियों में सैन्य अभियानों की सहायता कर सकता है।
- मोबाइल लॉन्च क्षमता युद्धक्षेत्र में लचीलापन बढ़ाती है।
- इसकी अर्ध-स्वायत्त कार्यप्रणाली लगातार मानवीय नियंत्रण पर निर्भरता को कम करती है।

राजस्थान के लिए प्रासंगिकता

- जोधपुर पश्चिमी राजस्थान में स्थित होने के कारण रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- उच्च तापमान और तेज हवा में सफल परीक्षण यह दर्शाता है कि यह यूएवी रेगिस्तानी और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।
- ऐसे परीक्षण पश्चिमी सीमाओं पर भारत की रक्षा तैयारियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

जोधपुर में 'दिव्यास्त्र एमके-1' का सफल परीक्षण भारत की रक्षा तकनीक में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसकी 500 km तक संचालन क्षमता, सेंसर प्रणाली, मोबाइल लॉन्च सुविधा और अर्ध-स्वायत्त संचालन इसे आधुनिक युद्धक्षेत्र की आवश्यकताओं के लिए उपयोगी बनाते हैं। RAS परीक्षा की दृष्टि से यह विषय रक्षा तकनीक, आंतरिक सुरक्षा, आत्मनिर्भर भारत और राजस्थान की रणनीतिक प्रासंगिकता से जुड़ा हुआ है।

MCQs

1. दिव्यास्त्र एमके-1 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- इसका सफल परीक्षण जोधपुर में किया गया।
- यह 500 km तक संचालित हो सकता है।
- इसके संचालन के लिए लगातार मानवीय नियंत्रण आवश्यक है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- A. केवल 1 और 2
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 3
D. 1, 2 और 3

उत्तर: A. केवल 1 और 2

व्याख्या: दिव्यास्त्र एमके-1 का सफल परीक्षण जोधपुर में किया गया और इसकी संचालन सीमा 500 km तक बताई गई है। यह लगातार मानवीय नियंत्रण पर निर्भर नहीं है, क्योंकि इसमें अर्ध-स्वायत्त संचालन क्षमता है। इसलिए कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

2. दिव्यास्त्र एमके-1 के सफल परीक्षण से संबंधित कौन-सी विशेषताएँ सही हैं?

- A. सौर प्रणोदन और जल के भीतर लॉन्च प्रणाली
B. इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल सेंसर, इन्फ्रारेड सेंसर और संचार रिले प्रणाली
C. मानवयुक्त कॉकपिट और मैनुअल आर्टिलरी फायरिंग प्रणाली
D. परमाणु प्रणोदन और केवल उपग्रह आधारित संचालन

उत्तर: B. इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल सेंसर, इन्फ्रारेड सेंसर और संचार रिले प्रणाली

व्याख्या: दिव्यास्त्र एमके-1 में इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड सेंसर के साथ संचार रिले प्रणाली मौजूद है। ये विशेषताएँ इसे निगरानी, खुफिया जानकारी जुटाने, लक्ष्य पहचान और सटीक प्रहार जैसे अभियानों के लिए उपयोगी बनाती हैं। अन्य विकल्पों में दी गई विशेषताएँ इस यूएवी से संबंधित नहीं हैं।

3. सामान्य ड्रोन और आत्मघाती ड्रोन या लोइटरिंग म्यूनिशन में मुख्य अंतर क्या है?

- A. सामान्य ड्रोन हमेशा पानी के भीतर प्रयोग होता है, जबकि आत्मघाती ड्रोन केवल अंतरिक्ष में प्रयोग होता है।
- B. सामान्य ड्रोन सामान्यतः पुनः उपयोग योग्य होता है, जबकि आत्मघाती ड्रोन लक्ष्य के साथ स्वयं को भी नष्ट कर देता है।
- C. सामान्य ड्रोन में सेंसर नहीं होते, जबकि आत्मघाती ड्रोन में केवल कैमरे होते हैं।
- D. सामान्य ड्रोन केवल विमान से छोड़ा जाता है, जबकि आत्मघाती ड्रोन केवल जहाज से छोड़ा जाता है।

उत्तर: B. सामान्य ड्रोन सामान्यतः पुनः उपयोग योग्य होता है, जबकि आत्मघाती ड्रोन लक्ष्य के साथ स्वयं को भी नष्ट कर देता है।

व्याख्या: सामान्य ड्रोन का मुख्य उपयोग निगरानी के लिए होता है और इसे मिशन के बाद सामान्यतः वापस प्राप्त कर दोबारा उपयोग किया जा सकता है। आत्मघाती ड्रोन या लोइटरिंग म्यूनिशन में विस्फोटक पेलोड होता है और यह लक्ष्य से टकराकर विस्फोट करता है। इसलिए इसका मुख्य उद्देश्य लक्ष्य को नष्ट करना होता है, न कि वापस प्राप्त होना।

Rajasthan State Aquatic Championship, Swimming Records and Youth Achievement



Senior State Aquatic Championship (75th) was held at Sawai Man Singh Stadium, Jaipur where swimmers from Rajasthan performed well. Yogya Singh (Bhilwara) and Dakshina Joshi (Udaipur) set new records in their events. Avika Lodha of Jaipur secured gold medal in 1500 m freestyle event in the women category while Mohammad Anas of Bhilwara has displayed an outstanding performance in women by winning two gold medals. The event showcased the rising talent of Rajasthan in the field of swimming and other aquatic sports. It also indicated the growing involvement of young sportsmen from Jaipur, Bhilwara, Udaipur, Dholpur and Jodhpur in the districts.

The key highlights of the Championship :

- The 75th Senior State Aquatic Championship was held at Sawai Man Singh Stadium, Jaipur.
- Yogya Singh (Bhilwara) broke the record for the women's 100m backstroke with the time of 1:08.46 minutes.
- Udaipur's Dakshina Joshi set a new record in the women's 200 m butterfly with a time of 2:22.03 min.
- Avika Lodha of Jaipur emerged with gold in the women's 1500 m freestyle with a timing of 24:06.06 minutes.
- Mohammad Anas of Bhilwara took gold medals in 200 m freestyle and 50 m backstroke events.
- The team of women from the school of Harika, Aadhya, Aashika and Vanya won gold in the 4 × 100 m freestyle relay with a time of 5:03.90 minutes.
- During the event, the girls of Jaipur also performed a synchronized swim which was quite a pretty show.

Major Performances

- Record-Breaking Swimmers
- Yogya Singh has set a new mark in the women 100m backstroke.
- Dakshina Joshi set a new record in the women's 200 m butterfly race.
- These records reflect the improvement of competitive swimming in Rajasthan from year to year.

Gold Medal Winners

- Avika Lodha won the 1500 m freestyle women's gold medal.
- Mohammad Anas collected two Gold medals which were among the highlights of the championship.
- The women relay team of Jaipur also won the first prize in 4x100 m freestyle relay race.

Importance for Rajasthan Sports

The championship is significant for the state of Rajasthan as it gives a platform for swimmers of various districts to compete with each other. These activities enable the identification of the sporting potential of young people and motivate participation in aquatic sports across the districts. The performance of the swimmers of Bhilwara, Jaipur, Udaipur and other districts indicates that swimming is becoming popular in the State.

Conclusion

The 75th Senior State Aquatic Championship at Jaipur was a great opportunity for the young swimmers of Rajasthan. The event was significant for state-level sports with Yogya Singh and Dakshina Joshi giving state-level record performances and Avika Lodha winning gold in 1500 m freestyle and Mohammad Anas winning double gold. The news is relevant for RAS preparation in the topics: Rajasthan current affairs, sports achievements, youth development.

MCOs

1. The 75th Senior State Aquatic Championship was held in which state?

- A. Udaipur
- B. Jodhpur
- C. Sawai Man Singh Stadium, Jaipur,
- D. Kota

Answer: C. Sawai Man Singh Stadium, Jaipur

Explanation – The event of 75th Senior State Aquatic Championship was conducted at Sawai Man Singh Stadium, Jaipur. It was the occasion of record breaking in various swimming events and a large number of swimmers of different districts of Rajasthan participated in the event.

2. Who was the winner of the women's 1500 m freestyle?

- A. Avika Lodha
- B. Dakshina Joshi
- C. Yogya Singh
- D. Harika

Answer: A Avika Lodha

Explanation : Avika Lodha of Jaipur won a gold in the women's 1500 m freestyle with a timing of 24:06.06 minutes. One of the highlights of the 75th Senior State Aquatic Championship was her performance.

3. Which of the following pair is correctly matched?

- A. Yogya Singh — Women's 100 m backstroke record
- B. Dakshina Joshi — Women's 1500 m freestyle gold
- C. Avika Lodha — Men's 50 m backstroke gold
- D. Mohammad Anas — Women's 200 m butterfly record

Answer : A. Yogya Singh is the woman's 100 m backstroke record.

Explanation : Yogya Singh (Bhilwara) set a new personal record in women's 100m backstroke. Dakshina Joshi set a record in the women's 200 m butterfly, Avika Lodha got gold in women's 1500 m freestyle and Mohammad Anas won 2 gold medals in men's events.

राजस्थान राज्य एक्वाटिक चैंपियनशिप, तैराकी रिकॉर्ड और युवा उपलब्धि

75वीं सीनियर स्टेट एक्वाटिक चैंपियनशिप जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित की गई, जहाँ राजस्थान के तैराकों ने शानदार प्रदर्शन किया। भीलवाड़ा की योग्या सिंह और उदयपुर की दक्षिणा जोशी ने अपने-अपने इवेंट में नए रिकॉर्ड बनाए। जयपुर की अविका लोढा ने महिला वर्ग की 1500 m फ्रीस्टाइल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता, जबकि भीलवाड़ा के मोहम्मद अनस ने दो स्वर्ण पदक जीतकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता ने राजस्थान में तैराकी और अन्य जलीय खेलों की उभरती प्रतिभा को प्रदर्शित किया। साथ ही, इसने जयपुर, भीलवाड़ा, उदयपुर, धौलपुर और जोधपुर जैसे जिलों के युवा खिलाड़ियों की बढ़ती भागीदारी को भी दर्शाया।

चैंपियनशिप की प्रमुख विशेषताएँ

- 75वीं सीनियर स्टेट एक्वाटिक चैंपियनशिप जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित की गई।
- भीलवाड़ा की योग्या सिंह ने महिलाओं की 100 m बैकस्ट्रोक स्पर्धा में 1:08.46 मिनट के समय के साथ नया रिकॉर्ड बनाया।
- उदयपुर की दक्षिणा जोशी ने महिलाओं की 200 m बटरफ्लाइ स्पर्धा में 2:22.03 मिनट के समय के साथ नया रिकॉर्ड बनाया।
- जयपुर की अविका लोढ़ा ने महिलाओं की 1500 m फ्रीस्टाइल स्पर्धा में 24:06.06 मिनट के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता।
- भीलवाड़ा के मोहम्मद अनस ने 200 m फ्रीस्टाइल और 50 m बैकस्ट्रोक स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक जीते।
- हरिका, आध्या, आशिका और वान्या की जयपुर टीम ने 4 × 100 m फ्रीस्टाइल रिले में 5:03.90 मिनट के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता।
- कार्यक्रम के दौरान जयपुर की बालिकाओं ने सिंक्रोनाइज्ड स्विमिंग का आकर्षक प्रदर्शन भी किया।

प्रमुख प्रदर्शन

रिकॉर्ड बनाने वाले तैराक

- योग्या सिंह ने महिलाओं की 100 m बैकस्ट्रोक स्पर्धा में नया रिकॉर्ड बनाया।
- दक्षिणा जोशी ने महिलाओं की 200 m बटरफ्लाइ स्पर्धा में नया रिकॉर्ड बनाया।
- ये रिकॉर्ड राजस्थान में प्रतिस्पर्धी तैराकी के स्तर में हो रहे सुधार को दर्शाते हैं।

स्वर्ण पदक विजेता

- अविका लोढ़ा ने महिलाओं की 1500 m फ्रीस्टाइल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता।
- मोहम्मद अनस ने दो स्वर्ण पदक जीते, जो इस चैंपियनशिप की प्रमुख उपलब्धियों में शामिल रहे।
- जयपुर की महिला रिले टीम ने 4 × 100 m फ्रीस्टाइल रिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

राजस्थान खेलों के लिए महत्व

यह चैंपियनशिप राजस्थान के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विभिन्न जिलों के तैराकों को प्रतिस्पर्धा करने का मंच प्रदान करती है। ऐसे आयोजन युवा खिलाड़ियों की खेल प्रतिभा की पहचान करने में सहायता करते हैं और जिलास्तर पर जलीय खेलों में भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। भीलवाड़ा, जयपुर, उदयपुर और अन्य जिलों के तैराकों का प्रदर्शन यह संकेत देता है कि राज्य में तैराकी लोकप्रिय हो रही है।

निष्कर्ष

जयपुर में आयोजित 75वीं सीनियर स्टेट एक्वाटिक चैंपियनशिप राजस्थान के युवा तैराकों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हुई। योग्या सिंह और दक्षिणा जोशी के रिकॉर्ड प्रदर्शन, अविका लोढ़ा के 1500 m फ्रीस्टाइल स्वर्ण पदक और मोहम्मद अनस के दोहरे स्वर्ण पदक ने इस आयोजन को राज्यस्तरीय खेलों के लिए महत्वपूर्ण बना दिया। RAS परीक्षा की दृष्टि से यह समाचार राजस्थान समसामयिकी, खेल उपलब्धियों और युवा विकास से संबंधित है।

MCQs

1. 75वीं सीनियर स्टेट एक्वाटिक चैंपियनशिप कहाँ आयोजित की गई?

- A. उदयपुर
- B. जोधपुर
- C. सवाई मानसिंह स्टेडियम, जयपुर
- D. कोटा

उत्तर: C. सवाई मानसिंह स्टेडियम, जयपुर

व्याख्या: 75वीं सीनियर स्टेट एक्वाटिक चैंपियनशिप जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित की गई। इस आयोजन में राजस्थान के विभिन्न जिलों के तैराकों ने भाग लिया और कई तैराकी स्पर्धाओं में रिकॉर्ड बनाने वाले प्रदर्शन भी देखने को मिले।

2. महिलाओं की 1500 m फ्रीस्टाइल स्पर्धा की विजेता कौन रहीं?

- A. अविका लोढ़ा
- B. दक्षिणा जोशी
- C. योग्या सिंह
- D. हरिका

उत्तर: A. अविका लोढ़ा

व्याख्या: जयपुर की अविका लोढ़ा ने महिलाओं की 1500 m फ्रीस्टाइल स्पर्धा में 24:06.06 मिनट के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता। उनका प्रदर्शन 75वीं सीनियर स्टेट एक्वाटिक चैंपियनशिप की प्रमुख उपलब्धियों में से एक रहा।

3. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?

- A. योग्या सिंह — महिलाओं की 100 m बैकस्ट्रोक रिकॉर्ड
- B. दक्षिणा जोशी — महिलाओं की 4 × 400 m फ्रीस्टाइल रिले स्वर्ण
- C. अविका लोढ़ा — पुरुषों की 50 m बैकस्ट्रोक स्वर्ण
- D. मोहम्मद अनस — महिलाओं की 200 m बटरफ्लाय रिकॉर्ड

उत्तर: A. योग्या सिंह — महिलाओं की 100 m बैकस्ट्रोक रिकॉर्ड

व्याख्या: भीलवाड़ा की योग्या सिंह ने महिलाओं की 100 m बैकस्ट्रोक स्पर्धा में नया रिकॉर्ड बनाया। दक्षिणा जोशी ने महिलाओं की 200 m बटरफ्लाइड स्पर्धा में रिकॉर्ड बनाया, अविका लोढ़ा ने महिलाओं की 1500 m फ्रीस्टाइल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता और मोहम्मद अनस ने पुरुष वर्ग की दो स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक जीते।

Rare Reptile Species, Wildlife Conservation and Rajasthan Biodiversity



For the first time, the Sistan Sand Boa has been spotted in India, adding to the country's reptile biodiversity. *Eryx sistanensis* is reported from Bikaner, Churu and Sikar regions of Rajasthan. It was added to India's snake list in 1991 and was significant after almost 35 years as Whitaker's Boa was discovered. Although the Sistan Sand Boa is a typical species of Iran, it has been found in Rajasthan, which suggests the desert and semi-arid environment is ecologically acceptable for rare reptile species. The finding is also significant from the point of view of the site's contribution to reptile conservation (apart from the well-publicized vulture conservation) in Jorbeed Conservation Reserve, Bikaner.

Key Facts

- Sistan Sand Boa is being recorded for the first time in India.
- It is also known as the *Eryx sistanensis*.
- It has been detected in Bikaner, Churu and Sikar regions of Rajasthan.
- Locally common in Iran.

- The same was found around 2200 km away from Iran in the Bikaner-Sikar region.
- The discovery has been reported in the 'Journal of Threatened Taxa' on 26 May.
- Wildlife experts, Vivek Sharma and Dharmendra Khandal, confirmed the discovery.
- Three live Sistan Sand Boas have been discovered in the outer regions and fields at Ramgarh-Shekhawati tehsil in Sikar district.
- One baby, one juvenile and one adult snake were among these.
- There is also some evidence of this species in Churu district.
- The snake was spotted by the wildlife photographer Dr Jeetu Solanki last year at Jorbeed and identified.

Conservation Status: Least Concern, Legal Protection: Protected.

Wildlife Protection

- Sistan Sand Boa is listed in Schedule-II of Wildlife Protection Act, 1972.
- The Red Sand Boa is included in Schedule-I of the Wildlife Protection Act, 1972.
- Sand boas are susceptible to illegal trade, further emphasizing the need for greater conservation efforts.
- The experts have pointed out the need for a re-evaluation of the protection status of the species.

Local Names

- The snake is also known as Domunhi, Bandi and Gucchi in local language.
- Non-venomous and regarded as a farmer friend, as a control of rats.

Importance for Rajasthan

Biodiversity Significance

- The newly found species is a member of India's biodiversity.
- The desert and semi-arid areas of Rajasthan play a crucial role again in conserving rare wildlife.
- Not just vultures, but reptiles also, have made Jorbeed Conservation Reserve of Bikaner an important place.
- Presence of the species in Churu, Sikar and Bikaner demonstrates the ecological value of dry lands of Rajasthan.

Relevance for RAS Exam

- This news is important from the point of view of Rajasthan current affairs and environment.
- It is associated to biodiversity, wildlife conservation and protected species.
- It can be asked under Rajasthan geography, ecology, biodiversity hotspots and Wildlife Protection Act, 1972.

Conclusion

Sistan Sand Boa is a great biodiversity development as it's the first record of such kind of snake in Rajasthan, India. The fact that it can also be found in the cities of Bikaner, Churu and Sikar has revealed the ecological significance of the desert ecosystem of Rajasthan. The discovery also reinforces the conservation, scientific documentation and protection of rare reptile species as per the Wildlife Protection Act, 1972.

MCQs

1. Sistan Sand Boa was recently spotted for the first time in India in which state?

- A. Gujarat
- B. Rajasthan
- C. Madhya Pradesh
- D. Maharashtra

Answer: B. Rajasthan

Explanation : For the first time the Sistan Sand Boa (*Eryx sistanensis*) has been found in India, in Rajasthan. It was reported from the Bikaner, Churu and Sikar regions. The finding is significant for the reptile biodiversity of India and desert areas of Rajasthan.

2. Regarding the Sistan Sand Boa, think about the following statements:

1. It is reported to be present in Bikaner, Churu and Sikar areas of Rajasthan.
2. It has been added to Schedule-II of the Wildlife Protection Act, 1972.
3. It is a very poisonous and destructive crop-borer.

Which of the statements given above is/are correct?

- A. 1 and 2 only

B. 2 and 3 only

C. 1 and 3 only

D. 1, 2 and 3

Answer: A. 1 and 2 only

Explanation : Sistan Sand Boa is found in the Bikaner, Churu and Sikar area of Rajasthan and is listed under Schedule-II of Wildlife Protection Act, 1972. It is not mentioned as a very poisonous snake. Instead, it is harmless and regarded as a farmer's friend due to its rat control abilities.

3. What is the importance of the discovery of Sistan Sand Boa in Rajasthan?

A. Shows that there is no desert biodiversity in Rajasthan.

B. This is the first ever record of this rare snake species in India.

C. It indicates that all the sand boas can be found in water bodies.

D. It validates the snake's value is limited to urban environments.

Answer: B. This is the first time that this rare species of snake has been recorded in India.

Explanation: It is important because the Sistan Sand Boa has been recorded in India for the first time. Since it is found in the arid areas of Rajasthan, desert and semi-arid landscape are ecologically significant. It also points out the importance of scientific documentation and conservation of rare reptile species.

दुर्लभ सरीसृप प्रजाति, वन्यजीव संरक्षण और राजस्थान की जैव विविधता

रत में पहली बार सिस्तान सैंड बोआ को दर्ज किया गया है, जिससे देश की सरीसृप जैव विविधता में एक महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। इसका वैज्ञानिक नाम *Eryx sistanensis* है और इसे राजस्थान के बीकानेर, चूरू और सीकर क्षेत्रों में पाया गया है। इससे पहले 1991 में Whitaker's Boa को भारत की सांप सूची में जोड़ा गया था, इसलिए लगभग 35 वर्षों बाद यह खोज महत्वपूर्ण मानी जा रही है। सिस्तान सैंड बोआ सामान्यतः ईरान से संबंधित प्रजाति मानी जाती है, लेकिन राजस्थान में इसकी उपस्थिति यह संकेत देती है कि मरुस्थलीय और अर्द्ध-शुष्क पर्यावरण दुर्लभ सरीसृप प्रजातियों के लिए अनुकूल हो सकता है। यह खोज बीकानेर के जोड़बीड़ कंजर्वेशन रिजर्व के महत्व को भी बढ़ाती है, जो गिद्ध संरक्षण के साथ-साथ सरीसृप संरक्षण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

प्रमुख तथ्य

- सिस्तान सैंड बोआ भारत में पहली बार दर्ज किया गया है।

- इसका वैज्ञानिक नाम *Eryx sistanensis* है।
- इसे राजस्थान के बीकानेर, चूरू और सीकर क्षेत्रों में पाया गया है।
- यह प्रजाति सामान्यतः ईरान में पाई जाती है।
- इसे ईरान से लगभग 2200 km दूर बीकानेर-सीकर क्षेत्र में पाया गया।
- इस खोज को 26 May को *Journal of Threatened Taxa* में प्रकाशित किया गया।
- वन्यजीव विशेषज्ञ विवेक शर्मा और धर्मेन्द्र खंडाल ने इस खोज की पुष्टि की।
- सीकर जिले की रामगढ़-शेखावाटी तहसील के बाहरी क्षेत्रों और खेतों से तीन जीवित सिस्तान सैंड बोआ पाए गए।
- इनमें एक शिशु, एक किशोर और एक वयस्क सांप शामिल था।
- चूरू जिले में भी इस प्रजाति की उपस्थिति के प्रमाण मिले हैं।
- वन्यजीव फोटोग्राफर Dr. Jeetu Solanki ने पिछले वर्ष जोड़बीड़ में रात के समय इस सांप की फोटो ली थी, जिसके बाद इसकी पहचान की पुष्टि हुई।
- संरक्षण स्थिति: Least Concern
- कानूनी संरक्षण: Protected

वन्यजीव संरक्षण

- सिस्तान सैंड बोआ को Wildlife Protection Act, 1972 की Schedule-II में शामिल किया गया है।
- रेड सैंड बोआ को Wildlife Protection Act, 1972 की Schedule-I में शामिल किया गया है।
- सैंड बोआ अवैध व्यापार के प्रति संवेदनशील होते हैं, इसलिए इनके संरक्षण प्रयासों को मजबूत करने की आवश्यकता है।
- विशेषज्ञों ने इस प्रजाति की संरक्षण स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता बताई है।

स्थानीय नाम

- स्थानीय भाषा में इस सांप को दोमुंही, बांडी और गुच्ची भी कहा जाता है।
- यह विषहीन सांप है।
- इसे किसान-मित्र माना जाता है, क्योंकि यह चूहों को नियंत्रित करने में मदद करता है।

राजस्थान के लिए महत्व

जैव विविधता की दृष्टि से महत्व

- यह नई दर्ज प्रजाति भारत की जैव विविधता का हिस्सा है।

- राजस्थान के मरुस्थलीय और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र दुर्लभ वन्यजीवों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- बीकानेर का जोड़बीड़ कंजर्वेशन रिजर्व केवल गिद्धों के लिए ही नहीं, बल्कि सरीसृपों के लिए भी महत्वपूर्ण बन गया है।
- चूरू, सीकर और बीकानेर में इस प्रजाति की उपस्थिति राजस्थान की शुष्क भूमि के पारिस्थितिक महत्व को दर्शाती है।

RAS परीक्षा के लिए प्रासंगिकता

- यह समाचार राजस्थान समसामयिकी और पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- यह जैव विविधता, वन्यजीव संरक्षण और संरक्षित प्रजातियों से संबंधित है।
- इसे राजस्थान भूगोल, पारिस्थितिकी, जैव विविधता और Wildlife Protection Act, 1972 के अंतर्गत पूछा जा सकता है।

निष्कर्ष

सिस्तान सैंड बोआ का भारत में पहली बार दर्ज होना जैव विविधता की दृष्टि से एक बड़ी उपलब्धि है। बीकानेर, चूरू और सीकर में इसकी उपस्थिति राजस्थान के मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के महत्व को उजागर करती है। यह खोज दुर्लभ सरीसृप प्रजातियों के संरक्षण, वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण और Wildlife Protection Act, 1972 के अंतर्गत इनके संरक्षण की आवश्यकता को भी मजबूत करती है।

MCQs

सिस्तान सैंड बोआ हाल ही में भारत में पहली बार किस राज्य में देखा गया?

- A. गुजरात
- B. राजस्थान
- C. मध्य प्रदेश
- D. महाराष्ट्र

उत्तर: B. राजस्थान

व्याख्या: सिस्तान सैंड बोआ, जिसका वैज्ञानिक नाम *Eryx sistanensis* है, भारत में पहली बार राजस्थान में पाया गया है। इसे बीकानेर, चूरू और सीकर क्षेत्रों से दर्ज किया गया है। यह खोज भारत की सरीसृप जैव विविधता और राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है।

सिस्तान सैंड बोआ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- यह राजस्थान के बीकानेर, चूरू और सीकर क्षेत्रों में पाया गया है।
- इसे Wildlife Protection Act, 1972 की Schedule-II में शामिल किया गया है।
- यह अत्यंत विषैला सांप है और फसलों को नष्ट करता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- A. केवल 1 और 2
- B. केवल 2 और 3
- C. केवल 1 और 3
- D. 1, 2 और 3

उत्तर: A. केवल 1 और 2

व्याख्या: सिस्तान सैंड बोआ राजस्थान के बीकानेर, चूरू और सीकर क्षेत्रों में पाया गया है और इसे Wildlife Protection Act, 1972 की Schedule-II में शामिल किया गया है। इसे अत्यंत विषैला सांप नहीं बताया गया है। इसके विपरीत, यह विषहीन है और चूहों को नियंत्रित करने की क्षमता के कारण किसान-मित्र माना जाता है।

राजस्थान में सिस्तान सैंड बोआ की खोज का क्या महत्व है?

- A. यह दर्शाता है कि राजस्थान में मरुस्थलीय जैव विविधता नहीं है।
- B. यह भारत में इस दुर्लभ सांप प्रजाति का पहला रिकॉर्ड है।
- C. यह बताता है कि सभी सैंड बोआ केवल जल निकायों में पाए जाते हैं।
- D. यह प्रमाणित करता है कि इस सांप का महत्व केवल शहरी पर्यावरण तक सीमित है।

उत्तर: B. यह भारत में इस दुर्लभ सांप प्रजाति का पहला रिकॉर्ड है।

व्याख्या: यह खोज महत्वपूर्ण है क्योंकि सिस्तान सैंड बोआ को भारत में पहली बार दर्ज किया गया है। राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में इसकी उपस्थिति मरुस्थलीय और अर्द्ध-शुष्क भू-दृश्यों के पारिस्थितिक महत्व को दर्शाती है। यह दुर्लभ सरीसृप प्रजातियों के वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण और संरक्षण की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है।

Millet Innovation, Climate-Resilient Farming and Rajasthan Agriculture



Millet Innovation, Climate-Resilient Farming and Rajasthan Agriculture

The scientists from the Agricultural Science Centre, Jaipur, have produced the first ever three-way hybrid pearl millet named RHB-273 in India. The variety has been developed by the Rajasthan Agricultural Research Institute (RARI), Jaipur jointly with ICRISAT. This is significant in the backdrop of the government's attempt to encourage the use of "Shri Anna" or millets. RHB-273 is developed to produce better in low rainfall environments and has a higher drought and adverse weather tolerance. The Ministry of Agriculture and Farmers Welfare has named this variety in the list of 184 other improved crop varieties released this year.

RHB-273 Pearl Millet is a drought-tolerant variety.

- India's first three way hybrid pearl millet variety is RHB-273.
- It has been developed by RARI, Jaipur, under the support of ICRISAT.
- It can be used in low rainfall areas of less than 400 mm.
- The crop matures in just 75-76 days.
- It is more tolerant of drought and adverse weather conditions.
- It gives an average production of 23 quintals of pearl millet per hectare.
- It also gives around 48 quintals of dry fodder per hectare.
- It has been added to the list of 184 improved varieties of crops released by the Ministry of Agriculture and Farmers Welfare.

What is a Three-Way Hybrid?

Three-way hybrid variety is a combination of 3 parent varieties.

Process

- First, a hybrid is produced, which is a cross between two pure lines.

- After that, such a hybrid is bred with a third parent line.
- The final seed, created in this way, is known as a three-way hybrid seed.

Approval for A Zone

The RHB-273 pearl millet variety has been approved for the country's A Zone. This clearance will have positive impact on farmers in Rajasthan and in other states like Haryana, Gujarat, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Delhi and Punjab. The variety can help farmers in low rainfall areas, enhance crop productivity and availability of fodder, said Dr Surendra Singh, Director of RARI, Jaipur.

Importance for Rajasthan

Agricultural Significance

- Rajasthan has large arid and semi-arid areas where water shortage has been causing a problem in crop production.
- Low water, drought-tolerant pearl millet variety can benefit dryland agriculture.
- The variety can enhance grain production and fodder availability.
- It enables farmers to cultivate crops in a climate-smart way in the arid deserts of Rajasthan.

Relevance for RAS Exam

- It is important to the current affairs of Rajasthan, agriculture and science and technology.
- It is linked with millets, climate-resilient crops, dryland farming and agricultural research institutions.
- It can be asked on the topics like Agriculture Innovation, Shri Anna, Crop improvement and Rajasthan agriculture development.

Conclusion

RHB-273 is an important success story of dryland agriculture and millet promotion by agricultural researchers in Jaipur. It is very useful crop for A Zone States of Rajasthan due to its adaptability to less than 400 mm of rainfall, early maturity and drought tolerance. This variety helps to make India's mission for millets more effective and helps in ensuring climate resilient agricultural systems.

MCQs

1. With the help of ICRISAT, which institution has developed a first-of-its-kind three-way hybrid pearl millet variety RHB-273 for India?

- A. Rajasthan Agricultural Research Institute, Jaipur
- B. Indian Agricultural Research Institute, New Delhi

- C. Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur
- D. National Dairy Research Institute, Karnal

Answer : A. Rajasthan Agricultural Research Institute, Jaipur

Explanation : Development of RHB-273 is by Rajasthan Agricultural Research Institute, Jaipur (RARI) under ICRISAT support. It is India's first three-way hybrid pearl millet variety and is created to provide higher production in low rainfall regions and to make it more drought and climate tolerant.

2. Which is the major characteristic of the pearl millet variety RHB-273?

- A. It can only be used in areas with a high rainfall in coastal regions.
- B. It is more effective under rainfall levels of less than 400 mm per year.
- C. It requires more than 150 days to mature.
- D. It is only developed for ornamental plantation.

Answer: B. It works well under conditions of rainfall less than 400 mm per year.

Explanation: RHB-273 is appropriate for regions with low rainfall and is suitable for application in regions with a rainfall of less than 400 mm annually. It requires 75-76 days to mature and is more tolerant to drought and adverse weather as compared to other. This is applicable for dryland farming areas like Rajasthan.

3. Refer to RHB-273 and answer the following questions:

- 1. It is a 3-way hybrid pearl millet variety.
- 2. It gives around 23 quintals of pearl millet per hectare.
- 3. It has been approved just for Rajasthan and nothing for other states.

Which of the statements given above is/are correct?

- A. 1 and 2 only
- B. 2 and 3 only
- C. 1 and 3 only
- D. 1, 2 and 3

Answer: A. 1 and 2 only

Explanation: RHB-273 is India's first three-way hybrid pearl millet. It gives an average production of around 23 quintals of pearl millet per hectare and 48 quintals of dry fodder per hectare. It is approved for A Zone which covers Rajasthan and other states like Haryana, Gujarat, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Delhi and Punjab.

मिलेट नवाचार, जलवायु-सहिष्णु खेती और राजस्थान कृषि

जयपुर के कृषि वैज्ञानिकों ने भारत की पहली थ्री-वे हाइब्रिड बाजरा किस्म RHB-273 विकसित की है। इस किस्म को राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, जयपुर ने ICRIASAT के सहयोग से विकसित किया है। यह उपलब्धि केंद्र सरकार द्वारा “श्री अन्न” यानी मिलेट्स को बढ़ावा देने के प्रयासों के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। RHB-273 को कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बेहतर उत्पादन देने के लिए विकसित किया गया है। यह किस्म सूखे और प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों के प्रति अधिक सहनशील है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इस वर्ष जारी 184 उन्नत फसल किस्मों की सूची में इसे शामिल किया है।

RHB-273 बाजरा किस्म की प्रमुख विशेषताएँ

- RHB-273 भारत की पहली थ्री-वे हाइब्रिड बाजरा किस्म है।
- इसे RARI, जयपुर ने ICRIASAT के सहयोग से विकसित किया है।
- यह 400 mm से कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।
- यह फसल केवल 75-76 दिनों में तैयार हो जाती है।
- यह सूखे और प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों के प्रति अधिक सहनशील है।
- यह प्रति हेक्टेयर औसतन 23 क्विंटल बाजरा उत्पादन देती है।
- यह प्रति हेक्टेयर लगभग 48 क्विंटल सूखा चारा भी देती है।
- इसे कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी 184 उन्नत फसल किस्मों की सूची में शामिल किया गया है।

थ्री-वे हाइब्रिड क्या है?

थ्री-वे हाइब्रिड किस्म 3 अलग-अलग पैतृक लाइनों के संयोजन से तैयार की जाती है।

प्रक्रिया

- सबसे पहले दो शुद्ध पैतृक लाइनों को क्रॉस करके एक हाइब्रिड विकसित किया जाता है।
- इसके बाद उस हाइब्रिड को तीसरी पैतृक लाइन के साथ क्रॉस किया जाता है।
- इस प्रक्रिया से तैयार अंतिम बीज को थ्री-वे हाइब्रिड बीज कहा जाता है।

A Zone के लिए स्वीकृति

RHB-273 बाजरा किस्म को देश के A Zone के लिए स्वीकृति मिली है। इससे राजस्थान के साथ हरियाणा, गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली और पंजाब के किसानों को लाभ मिलेगा। RARI, जयपुर के निदेशक Dr. Surendra Singh के अनुसार, यह किस्म कम वर्षा वाले क्षेत्रों में किसानों की सहायता कर सकती है, फसल उत्पादकता बढ़ा सकती है और चारे की उपलब्धता में सुधार कर सकती है।

राजस्थान के लिए महत्व

कृषि महत्व

- राजस्थान में बड़े स्तर पर शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र हैं, जहाँ जल की कमी फसल उत्पादन को प्रभावित करती है।
- कम पानी में उगने वाली और सूखा-सहिष्णु बाजरा किस्म शुष्कभूमि कृषि के लिए लाभकारी हो सकती है।
- यह किस्म अनाज उत्पादन और चारे की उपलब्धता दोनों को बढ़ा सकती है।
- यह राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में जलवायु-स्मार्ट खेती को बढ़ावा देती है।

RAS परीक्षा के लिए प्रासंगिकता

- यह समाचार राजस्थान समसामयिकी, कृषि और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- यह मिलेट्स, जलवायु-सहिष्णु फसलों, शुष्कभूमि खेती और कृषि अनुसंधान संस्थानों से संबंधित है।
- इसे कृषि नवाचार, श्री अन्न, फसल सुधार और राजस्थान के कृषि विकास जैसे विषयों के अंतर्गत पूछा जा सकता है।

निष्कर्ष

RHB-273 जयपुर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा शुष्कभूमि कृषि और मिलेट्स को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। 400 mm से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अनुकूलता, जल्दी पकने की क्षमता और सूखा-सहिष्णुता इसे राजस्थान और अन्य A Zone राज्यों के लिए उपयोगी बनाती है। यह किस्म भारत के मिलेट मिशन को मजबूत करने और जलवायु-सहिष्णु कृषि प्रणाली को आगे बढ़ाने में सहायक है।

MCQs

ICRISAT के सहयोग से भारत की पहली थ्री-वे हाइब्रिड बाजरा किस्म RHB-273 किस संस्थान ने विकसित की?

- A. राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, जयपुर
- B. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
- C. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
- D. राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

उत्तर: A. राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, जयपुर

व्याख्या: RHB-273 को राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, जयपुर ने ICRISAT के सहयोग से विकसित किया है। यह भारत की पहली थ्री-वे हाइब्रिड बाजरा किस्म है। इसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में

बेहतर उत्पादन देने और सूखे तथा प्रतिकूल मौसम के प्रति अधिक सहनशील बनाने के उद्देश्य से विकसित किया गया है।

RHB-273 बाजरा किस्म की प्रमुख विशेषता क्या है?

- A. यह केवल अधिक वर्षा वाले तटीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।
- B. यह 400 mm से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन कर सकती है।
- C. इसे परिपक्व होने में 150 दिनों से अधिक समय लगता है।
- D. इसे केवल सजावटी पौधारोपण के लिए विकसित किया गया है।

उत्तर: B. यह 400 mm से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन कर सकती है।

व्याख्या: RHB-273 कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है और 400 mm से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकती है। यह केवल 75-76 दिनों में पक जाती है तथा सूखे और प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों के प्रति अधिक सहनशील है। इसलिए यह राजस्थान जैसे शुष्कभूमि कृषि क्षेत्रों के लिए उपयोगी है।

RHB-273 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- यह थ्री-वे हाइब्रिड बाजरा किस्म है।
- यह प्रति हेक्टेयर लगभग 23 क्विंटल बाजरा उत्पादन देती है।
- इसे केवल राजस्थान के लिए स्वीकृत किया गया है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- A. केवल 1 और 2
- B. केवल 2 और 3
- C. केवल 1 और 3
- D. 1, 2 और 3

उत्तर: A. केवल 1 और 2

व्याख्या: RHB-273 भारत की पहली थ्री-वे हाइब्रिड बाजरा किस्म है। यह प्रति हेक्टेयर औसतन लगभग 23 क्विंटल बाजरा और 48 क्विंटल सूखा चारा उत्पादन देती है। इसे केवल राजस्थान के लिए स्वीकृत नहीं किया गया है, बल्कि A Zone के लिए स्वीकृति मिली है, जिसमें राजस्थान के साथ हरियाणा, गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली और पंजाब शामिल हैं।

RASonly